SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
“ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION” ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

रत्नकुमार सांभरिया की दलित कहानियों का कथ्यागत विश्लेषण

किरण बाला, शोधार्थी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़ (कर्नाटक)

प्रस्तावना

साहित्य और समाज का अन्योन्यभाव संबंध है। वे एक दूसरे पर आश्रित होने के कारण समाज में घट रही सभी गतिविधियों का चित्रण व आंकलन समय–समय पर परिलक्षित होता रहता है। साहित्य रचना द्वारा तत्कालीन समाज में हो रहे गंभीर विषयों पर सवाल उठाया जा सकता है, साथ ही सही मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

दलित साहित्य, दलित होने का एहसास दिलाता है। ‘दलित’ की पीड़ा उसके जन्म के साथ ही पैदा होती है और उसके मरण के साथ ही समाप्त होती है। बदलती सामाजिक परिवेश में दलित का दर्द कुछ हद तक कम हुआ है, किन्तु समाप्त नहीं हो पाया है। शायद ही वह समाप्त हो पाएगी। इन्हीं दलित होने का एहसास, भोगे हुए पीड़ाओं के अनुभव के गंध के साथ उभरा हुआ साहित्य को ही हम रत्नकुमार सांभरिया की रचनाओं में देख सकते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का कथ्य विश्लेषण का अध्ययन इस अध्याय में किया गया है।

रत्नकुमार सांभरिया की दलित कहानियों का कथ्यगत विश्लेषणः– हिन्दी दलित साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में रत्नकुमार सांभरिया जी का अपना विशेष स्थान है। रत्नकुमार सांभरिया जी को साहित्य में ‘चेतना युग’ का प्रबर्तक माना जाता है। रत्नकुमार सांभरिया का कथा–साहित्य उनके अनुभवों और भोगे हुए यथार्थ का लेखा–जोखा है। उन्हीं अनुभवों की चाशनी में डूबाकर उन्होंने साहित्य का सृजन किया है। जो समाज में सदियों से पीड़ित, शोषित, उपेक्षित वर्गों का आवाज़ बनकर उभरकर सामने आया है।

रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य रचना बहुआयामी है। उन्होंने लघुकथा, कहानी, नाटक, एकांकी आदि विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सांभरिया का जन्म दलित वर्ग में होने के कारण उन्हें दलित साहित्यकार माना जाता है। किन्तु वे अपने साहित्य क्षेत्र में प्रचलित दलित शब्द की विस्तृत परिभाषा को अपनाकर समाज में शोषित, उपेक्षित सभी वर्ग को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनके साहित्य सृजन का मुख्य ध्येय उपेक्षित और शोषित वर्ग को दलित्व से उबारकर शिक्षा और पुनर्वास की ओर उन्मुख करना है।

रत्नकुमार सांभरिया क्रांतिदृष्टा, परिवर्तनकारी कहानीकार है। वे अपनी कहानियों में समतामूलक भ्रातत्वपूर्ण व मानव–मूल्यों से प्रेरित परिवर्तनकारी मनोविज्ञान सृजन कर सामाजिक संरचना में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया दलित कहानी के संदर्भ में लिखते है कि–’’दलित कहानी (दलित समाज की कहानी) जिसे अंबेडकरवादी कहानी भी कहा जाने लगा है, को पूंजीवादी ताकतों, सामंतवादी दर्प और ब्राह्मणवादी प्रवृत्तियों से कदम दर कदम लड़ते आगे निकलना है। कहने का अभिप्राय यह है जिस कहानी की प्रवृत्ति और रूपबंध चेतनामूलक क्षमता होगी, वही कहानी दलित कहानी होने का सेहरा बंधवा पाएगी।’’

रत्नकुमार सांभरिया नयी सदी के ज्वलंत मुद्दों को केन्द्र बनाकर कहानियाँ लिखते हैं। उनकी कहानियों की कथ्य, वस्तु, संवेदना, विचार और शिल्प बहुत संगठित है तथा परिपक्व भी। उन्होंने ऐसे अछूतें समुदायों के जीवन की कहानियाँ लिखी है जो प्रायः सदियों से हाशिये पर रहे हैं। उनकी कहानियों के केन्द्र में समाज का सबसे दुर्बल, उपेक्षित, वंचित दलित तथा शोषित वर्ग रहा है जो सदियों से संतप्त था। दूसरे शब्दों में कहे तो उनकी कहानियों में दलित समाज की मार्मिक समस्याओं का यथार्थ आंकलन है। उनकी कहानियाँ दलित समाज की चेतना को जागृत करती हैं।

निष्कर्षः– रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ दलित समाज से सरेकार रखती है। वे दलित कहानियों के परंपरागत विशेषताओं से आगे बढ़कर शोषण को अपनी नियति न मानकर ड्रॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के बताये मार्ग को अपनाते हुए शोषित वर्गों में आत्म सम्मान भरकर जीने की प्रेरणा देती है। उनके अधिकांश कहानियों में दलित पात्र शोषण के प्रति अपना आक्रोश दिखाता हुए, स्त्रियाँ अपनी अस्मिता के लिए लड़ती हुई दिखाई देती है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. डॉ. विवेकीशंकर : स्त्री–अस्मिता के प्रश्न और प्रेमचन्द, पृ. 4
2. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–फुलवा, पृ. 24
3. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–कौड़ा, पृ. 45
4. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–गूँज, पृ. 63
5. रत्नकार सांभरिया : दलित समाज की कहानियाँ, कहानि–हुकम की दुग्गी, पृ. 128